



शंकर कृत श्रीअयोध्या पंचकम्

श्रीगणेशाय नमः

याऽयोध्या जगतीतले तु मनुना वैकुण्ठतो ह्यानिता
याचित्वा निजसृष्टिपालनपरं वैकुण्ठनाथं प्रभुम्
या वै भुमितले निधाय विमला चेक्ष्वाकवे चार्पिता
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा
मुक्तिदा । १ ।

हिन्दी भावार्थ:- जिस अयोध्या पुरी को महाराज मनु अपनी
सृष्टि के पालन में दत्तचित्त प्रभु वैकुण्ठनाथ श्रीहरि से
मांगकर वैकुण्ठलोक से इस भुमितल पर लाए, जिस विमल
अर्थात् रज शुन्य पुरी को इस भुमितल पर स्थापित कर उसे
महाराज इक्ष्वाकु को समर्पण किया। ऐसी सभी धामो में
सर्वश्रेष्ठ मुक्ति देनेवाली परमात्मा श्रीराम की नित्य
वासस्थली श्री अयोध्या पुरी की जय हो।

English Interpretation: Glory be to Sri Ayodhya
Puri—that very city which King Manu, having
requested it from Lord Vaikunthanath Sri Hari (the
Supreme Lord ever-devoted to the sustenance of

His creation), brought down from the realm of Vaikuntha to this earthly plane; and which, having established this pristine—that is, utterly pure and untainted—city upon this earth, he then entrusted to King Ikshvaku. Glory to Sri Ayodhya Puri—the eternal abode of the Supreme Soul, Sri Rama—which stands as the foremost among all holy pilgrimage sites and is the supreme bestower of liberation.

या चक्रोपरि राजते च सततं वैकुण्ठनाथस्य वै
या वै मानवलोकमेत्य सकलान् दात्री सदा वाञ्छितान्।
या तीर्थानि पुनाति सन्ततमहो वर्ति तीर्थोपरि
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ॥२॥

हिन्दी भावार्थ:- जो अयोध्यापुरी बैकुण्ठनाथ के चक्र के ऊपर विराजमान है, जो इस मृत्युलोक में आकर सदा सकल इच्छित वस्तुओं को प्रदान करनेवाली है, जो समस्त तीर्थों को निरन्तर पवित्र करती है, समस्त तीर्थों में शिरोमणि है, ऐसी उस सभी धामों में सर्वश्रेष्ठ मुक्ति देनेवाली परमात्मा

श्रीराम की नित्य लीला स्थली श्रीअयोध्या पुरी की जय हो।

English Interpretation: Glory be to Sri Ayodhya Puri—the eternal abode of the Supreme Lord Sri Rama—which rests upon the divine discus of the Lord of Vaikuntha; which, upon manifesting in this mortal realm, unfailingly bestows all desired objects; which ceaselessly sanctifies all places of pilgrimage; and which stands as the crown jewel among all holy sites—truly the supreme among all divine abodes and the bestower of ultimate liberation.

यस्यां वैष्णव सज्जनाः सुरसिकाः स्वाचारनिष्ठाः सदा
लीला धाम सुनाम रूप दयिताः श्रीरामचन्द्रेताः ।
यस्यां श्रीरघुवंशजः परिकरैः सार्द्धं सदा राजते
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ॥३॥

हिन्दी भावार्थ:- जहां पर प्रशस्त आचरणवाले तथा निरन्तर नाम , लीप, लीला एवं धाम के भेद समन्वित भगवत् तत्व में प्रीतिभाव रखनेवाले परम रसिक वैष्णव सत्पुरुष

श्रीरामचन्द्र का आश्रय ग्रहण कर निवास करते हैं, जहां रघुकुल शिरोमणि श्रीराम अपने परिकरों लक्ष्मण, हनुमान आदि के साथ सर्वदा विराजते हैं, ऐसी उस सभी धामों में सर्वश्रेष्ठ परमात्मा श्रीराम की नित्य निवास स्थली मुक्तिप्रदायिणी श्रीअयोध्या पुरी की जय हो।

English Interpretation: - Where the highly rasika Vaishnav virtuous man, who has good conduct and has constant love for the divine element, integrated with the name, leep, leela and the secrets of Dham, resides after taking the shelter of Shri Ramchandra, where Raghukul Shiromani Shri Ram always resides with his attendants Lakshman, Hanuman etc., may there be victory to Muktipradini Shri Ayodhya Puri, the eternal abode of Supreme Lord Shri Ram, the best among all those dhams.

यस्यां तीर्थशतं सदा निवसति ह्यानन्दं पावनं
यस्या दर्शन लालसा मुनिवरा ध्यानेरताः सर्वदा।
यस्या भूमि रजस्त्वजादि विवुधा वाञ्छन्ति स्वामीष्टदं
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ॥४॥

हिन्दी भावार्थ:- जिस अयोध्या पुरी में आनंदप्रद तथा परम पवित्र, सैकड़ों तीर्थ निवास करते हैं, सदा ध्यान में तल्लीन श्रेष्ठ मुनिगण जिस पुरी के दर्शन की लालसा रखते हैं, जिस पुरी की अनादि धुलि को अभीष्ट देनेवाली समझकर ब्रह्मादि सकल देवता सदा चाहते हैं, ऐसी सभी धामों में सर्वश्रेष्ठ, मुक्तिदात्री, परमात्मा श्रीराम की नित्य वासस्थली श्रीअयोध्या पुरी की जय हो।

English Interpretation: - Glory be to Sri Ayodhya Puri—the supreme among all holy abodes, the bestower of liberation, and the eternal dwelling place of the Supreme Lord Sri Rama—within which reside hundreds of blissful and supremely sacred pilgrimage sites; the city whose very sight is yearned for by the most exalted sages, who remain perpetually immersed in deep meditation; and the city whose primordial dust is ever sought after by all the deities—including Brahma—who regard it as the fulfiller of all desires.

यस्यां भाति प्रमोदकाननवरं रामस्य लीलास्थलं

यत्र श्रीसरिताम्बरा च सरयू रत्नाचलः शोभते।
ध्येया ब्रह्ममहेशविष्णुमुनिभिर्हृत्आनन्ददा सर्वदा
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा ॥५॥

हिन्दी भावार्थ:- जिस अयोध्या पुरी में श्रीराम का
क्रीड़ास्थल प्रमोदवन है, जहां पर नदियों में श्रेष्ठतम
श्रीसरयु नित्य बहती है, जहां रत्नाचल देवरुप मणिपर्वत
शोभा बढ़ा रहा है, आनंदप्रदायिनी जिस पुरी का ब्रह्मा-विष्णु-
महेश सर्वदा ध्यान करते हैं, ऐसी धामों में
शिरोमणि ,परमात्मा श्रीराम की नित्य वासस्थली
श्रीअयोध्या पुरी की जय हो।

English Interpretation: - Glory be to Sri Ayodhya
Puri—the crown jewel among holy abodes—where
Pramodavan serves as the playground of Sri Rama;
where the sacred Sri Sarayu, the foremost among
rivers, flows eternally; where the divine Ratnachal
(the Jewel Mountain) enhances the splendor of the
land; and upon which Brahma, Vishnu, and Mahesh
ceaselessly meditate as the abode that bestows

supreme bliss. Hail to Sri Ayodhya Puri, the eternal dwelling place of the Supreme Soul, Sri Rama!

यः श्लोकपञ्चकमिदं मनुजः पठेत्
ध्यात्वाहृदि प्रतिदिनं रघुनन्दनाङ्घ्रिम् ।
हित्वा बहूनि दुरितानि पुरार्जितानि
प्राप्नोति अभीष्टधनधर्ममथापवर्गम् ॥

हिन्दी भावार्थ:- जो मनुष्य प्रतिदिन अपने हृदय में रघुनाथ के चरणकमलो कि ध्यान कर इन पांच श्लोको का पाठ करता है, वह पूर्व जन्मों के अर्जित समस्त पापों से मुक्त होकर इच्छित धन, धर्म, मोक्ष आदि को प्राप्त करता है।

English Interpretation: - The person who, while meditating daily in their heart upon the lotus feet of Raghunath, recites these five verses, becomes liberated from all sins accumulated in previous births and attains their desired wealth, righteousness, salvation, and other aspirations.

इति श्रीअयोध्या पंचकम् संपुर्णम्